राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 7 अंक : 87 15 जुलाई 2004

सदस्यता शुल्क : ——— भारत, नेपाल व सिक्किम में

वार्षिक : रुपए 40/- एक प्रतिः रुपए 5/-

इस अंक में

1.	बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग	2
2.	ध्यानाकर्षण बिन्दू व सूचना	22
3.	अहंकार (महर्षि शिवव्रतलाल जी)	23
4.	कहानी- गन्दा पानी	24
5.	अनमोल वचन व ज्ञान-सार	25
6.	सत्संग सार	26
7.	सतगुरु कृपा	29
8.	कांटेदार बेरी	31
9.	सूचना	32

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइटः- www.radhaswamidinod.org

इ-मेलः- info@radhaswamidinod.org

भिवानी : कैसेट क्रमांक : 96

दिनांक : 9 नवम्बर, 1992

समय : दोपहर

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों! मेरी छोटी उम्र थी, मुझे दो–तीन दोहे याद थे। अगर आप लोग भी इन दोहो के उसूल पर चल पड़ो तो आपका भला ही भला होगा। मैं बड़ा परेशान और दुखी था। इन दोहों ने मेरी बड़ी मदद की है। आप लोगों को भी मैंने बार–बार ये दोहे बताए हैं। कौन से दोहे थे? पहला तो यही था–

बने तो गुरू से बने, ना बिगड़ै भरपूर।
तुलसी बनै जो और से, उस बनने पर धूर।।

इस दोहे ने मेरी बड़ी मदद की। आप लोगों को पता है कि मैं छोटी उम्र से ही साधु महात्माओं के पास बहुत घूमा था। पर मैं कभी बिष्टे की मक्खी बन कर किसी के पास नहीं गया। मैं तो मधुमक्खी बनकर गया। मेरे महाराज जी ने यही कहा था कि बेटा! बिष्टे की मक्खी न बनना, मधुमक्खी बनना। मक्खियों का आपको पता है। बिष्टे की मक्खी तो ऐसी होती है कि न तो आप ही खाती है और न औरों को ही खाने देती है। जिस भी खाने पर बैठ जाती है उसको बिगाड़ देती है। परन्तु मधुमक्खी फूल की शोभा को नहीं बिगाड़ती है और उसमें से रस ले लेती है। उस गुण को और उस रस को इकट्ठा कर लेती है। पता नहीं कितनों

को वह काम आता है। सो मधुमक्खी बनो। दूसरा दोहा यह था—

गुरू बढ़ाए सब बढ़े, बलकर बढ़ा न कोय।
बलकर रावण हिरणाकुश बढ़े, दिए जड़ामूल से खोय।।

मैं इस दोहे को याद किया करता था और कहता था कि सतगुरू की अपार दया है। जो बनता है वह गुरू की दया से ही बनता है। प्रेमियो ! गुरू पर श्रद्धा और विश्वास आना ही बड़ा मुश्किल है। क्योंकि आज कल के ऐसे ही गुरू हैं कि ढ़ांचा ही बिगाड़ दिया है। हमारे जैसे भोले लोगों का धन भी ले लेते हैं और इज्जत भी ले लेते हैं। पर मुझ पर सतगुरू की बड़ी दया थी। उन दोहों का सहारा लेकर मैं आप लोगों की सेवा करता रहा। यह बात भी मैंने कई बार बताई है कि मेरे साथ बड़ी—बड़ी आफतें बीतीं हैं। पर मुझे एक सतगुरू का सहारा और भरोसा था। उनकी दया का सहारा था। मेरे पास तो दो ही हथियार थे। तीसरा कोई हथियार नहीं था। वैसे हथियार दो भी नहीं है। **हथियार तो एक ही है। सतगुरू और नाम में कोई भेद नहीं है। सतगुरू और नाम दो नहीं होते हैं। जैसे इंसान और उसकी छाया दो नहीं हो सकते हैं। इंसान नहीं है तो छाया भी नहीं होती और छाया नहीं है तो इन्सान कहां हो सकता है। सो नाम और सतगुरू दो नहीं है। एक ही होते हैं। सतगुरू तभी बन सकता है जब वह नाम को प्रगट कर लेता है।**

नाम कौन सा होता है? नाम धुनात्मक होता है। यह सारी दुनिया की जान है। इसकी धुनकारें उठती हैं। छठे चक्र से नीचे—नीचे सब नाम वर्णात्मक हैं और ये सब मन मर्जी के नाम हैं। ये सभी हमारे बनाए हुए नाम हैं। दो होते हैं—एक मनुष्य कत (मनुष्य द्वारा बनाया हुआ) और दूसरा ईश्वर कत (परमात्मा द्वारा बनाया हुआ)। परमात्मा के बनाए हुए नाम छठे चक्कर से ऊपर आते हैं। उन्हें धुनात्मक कहते हैं। फिर भी मैंने आप लोगों को

बताया कि सतगुरू और नाम में कुछ भी भेद नहीं है। सतगुरू और नाम एक ही है। सतगुरू पूर्ण ही तभी होता है जब वह नाम को प्रगट कर लेता है। जब नाम प्रगट होता है तो रंग ही बदल जाता है। उसे किसी चीज की जरूरत नहीं रहती है। जिसके पास पारस पथरी है वह जगह—जगह सोने की भीख नहीं मांगेगा। उसे तो जहां भी लोहा मिलेगा पथरी से छू कर सोना बना लेगा। जिसके पास कामधेनु गाय है, वह दूसरी जगह मांगने के लिए क्यों जाएगा? उसे तो गाय से ही सब कुछ मिल जाएगा। जो कल्पतरू वक्ष की छाया में बैठा है, उसे तो एक विचार ही करना होता है जो सोचेगा वही बन जाएगा।

ऐ सत्संगियो! जिसने सतगुरू की शरण ले ली और नाम की कमाई कर ली उसके लिए नाम ही तो कल्पतरू वक्ष है। नाम ही काम धेनु गाय है। नाम प्रगट करने वालों का ही नाम सतगुरू है। मैं सतगुरू की बात कहता हूं। सतगुरू में और गुरू में बड़ा भारी अन्तर है। पर मैं जो बातें कहना चाहता हूं वे बातें तो बाकी रह गयी हैं। इन दोहों ने बड़ी मदद की है। जब कोई आफत आती थी तब यह दोहा कहा करता था—

टिका रहो, टिका रहो, मत हो डांवा डोल।
डिगे की कौड़ी नहीं, टिके के लाखों मोल।।

एक दोहा महाराज जी से सुना था वह पूरा याद नहीं है। अपने मन को समझाने के लिए इतना ही बोला करता था—

तू बांध कमर क्यों डरता है।
फिर देख खुदा क्या करता है।।

तुम तो सोचते होंगे कि यह तो बड़ी ऊंची स्टेज पर बैठा है। मैं ऊंची स्टेज पर नहीं बैठा हूं। यह तो आप लोगों की मेहरबानी है। ये सारी माताएं और बहनें मेरी सतगुरू हैं। इन्होंने ही मेरी रक्षा की है। आप लोग सब मेरे सतगुरू हो। मैं तो सभी में सतगुरू का

ही रूप देखता हूं, क्योंकि ब्रह्मनेष्ठा को सब जगह ब्रह्म की ब्रह्म दिखाई देता है। मैं अपने दिल से कभी भी नहीं चाहता कि मेरी ओर से किसी का दिल दुखे। मेरी ओर से हर किसी को शांति ही पहुंचें। मेरी तरफ से किसी को नुकसान हो जाए तो मैं हर जगह माफी मांगता रहूं कि मालिक ऐसा न करवाना। यह आप लोगों की मेहरबानी थी और सतगुरू का सहारा था। एक शब्द गाया करते हैं कि सतगुरू कागा से हंस बना देते हैं।

सत्संगियो ! मेरी हालत मत पूछो। अगर तुम भी गुरू पर विश्वास करके काम करोगे तो तुम भी कर लोगे। गुरू तो तुम्हारे अंदर बैठा है। पर देहधारी से भी प्यार करना पड़ता है। अगर हम देहधारी से प्यार नहीं करेंगे तो अंदर वाला सतगुरू कभी भी प्रगट नहीं होगा। जैसे लड़की अपने पीहर में बैठी रहेगी और ससुराल जाकर अपने पति से प्यार नहीं करेगी तो वह कभी भी पुत्र नहीं खिला सकेगी। इसी तरह जब देहधारी पूर्ण सतगुरू मिल जाता है और उससे प्यार करते हैं तो नूरी गुरू भी अंतर में प्रगट हो जाता है। स्वामी जी महाराज की वाणी है–

गुरू मोहे अपना रूप दिखाओ।
ये भी रूप पियारा मोको, पर इससे वो दरसाओ।
तांते महिमा भारी इसकी, पर इससे वो दरसाओ।।

इस देहधारी गुरु की महिमा तो भारी है। पर इससे वह (नूरी गुरु) दरसाओ। जब तक यह देहधारी गुरू खुश नहीं होता, तब तक वह नूरी गुरू नहीं मिलेगा। स्वामी जी कहते हैं–

देख प्यारे मैं समझाऊं, रूप हमारा न्यारा।
वह तो रूप लखे नहीं कोई जब तक देऊं न सहारा।।

उस रूप को तो जब तक मैं सहारा नहीं दूंगा, देखा नहीं जा सकता। वह सहारा क्या है? आप लोग सत्संग में जाते हो और नाम भी ले लेते हो। क्या पता नहीं लगता कि शरण में जाते ही

सतगुरू कौन सा सहारा देता है? ऐ सत्संगियो! वह यही सहारा देता है कि तुम मर्यादा पर चलो। मर्यादा न तोड़ो। शराब–कबाब से बचने की कोशिश करो। मैं तो यही कहता हूं कि जो सतगुरू कहता है उस बात पर टिके रहो। यदि उस बात पर चलोगे तो तुम भी अपना काम कर जाओगे। अपना जीवन सफल कर लोगे। भागी वही इंसान है जिसने अपना जीवन सफल कर लिया। जो अपनी सुरत प्रकाश और शब्द में ले गया। वह आदि घर ही सुरत का असली घर है। जब आप अपने घर पहुंच जाते हो तो बताओ कितनी शांति मिलती है? कोई घर भूल भी जाता है। जब हम अपने भूले हुए उस घर पर पहुंच जाते हैं तो कितनी शांति मिलती है? किसको? खुद पहुंचने वाले को शांति मिलती है। परिवार वालों को शान्ति मिलती है। इसी तरह हमारी यह बिछड़ी हुई रूह (सुरत) सतगुरू के कहने के मुताबिक जब वापिस चल पड़ती है और मंडलों को तय करती हुई अपने घर पहुंच जाती है तो हंस और वंश दोनो मिल जाते हैं। हंस अपने वंश को देखकर खुश हो जाता है और अपनी जगह पर पहुंच जाता है। इतनी खुशी होती है कि वर्णन नहीं किया जा सकता। बाहर की कोई मिसाल नहीं दी जा सकती। सो अपने घर पर पहुंचने की कोशिश करो। घर पहुंचने की निशानी क्या है? किसी के दिल में ख्याल भी आया होगा कि हम साधन–अभ्यास तो बहुत करते हैं पर घर पहुंचने की निशानी कौन सी है? मेरे पास भी बहुत आते हैं और कहते हैं कि भजन नहीं बनता है। हमें ये बातें बताओ। मैंने कहा–मैंने एकान्त में बैठा करके कभी किसी को बात नहीं बताई है। यह धोखा होता है। कोई किसी मत का हो सब को सबके बीच में ही बता देता हूं। यदि भजन नहीं बनता है तो इसमें तुम्हारा ही कोई दोष होगा। आप लोग शिकायत करते हो कि हमारा भजन नहीं बनता है। भजन बनने की क्या पहचान है? भजन बनने की बड़ी पहचान तो

यही है कि तुम्हारे दिल में शांति आ जाएगी। कई बार स्वामी जी का एक दोहा भी कहा करता हूं कि शब्द की कमाई करने वाले को बड़ी भारी शांति आ जाती है। किस तरह? पहली बात तो यही कही है—

मनसा वाचा कर्मना, दुख काहू मत देय।
एती रहणी जो रहे, सोई शब्द रस लेय।।

तीन ही बातें हैं। इन बातों पर कोई चल पड़ा तो शब्द का रस ले सकता है। शब्द के बिना न तो हम अपने सतगुरू के दर्शन कर सकते हैं और न ही हम अपने घर पहुंच सकते हैं। काफी लोग तो शब्द को मानते ही नहीं हैं। उनका क्या किया जाए? भला वे शब्द को तो नहीं मानते पर परमात्मा को तो मानते हैं। अगर कोई परमात्मा को भी न माने तो तुम उसका क्या कर लोगे? कई ऐसे भी हैं जो अपने मां–बाप को ही नहीं मानते हैं। बहुत ऐसे मिल जाते हैं जो परमात्मा को नहीं मानते हैं। पर जो नास्तिक है उन्हें भी आखिर में कहना पड़ता है। जब उनका वक्त आ जाता है तो उन्हें भी कहना पड़ता है कि इस गांव का, देश का चलाने वाला भी माली है। कभी न कभी उन्हें यह कहना पड़ता है। पर मैं जो बातें कह रहा था वे और भी पीछे छोड़ दीं। मैं आप लोगों को विश्वास और श्रद्धा की बातें कह रहा था कि जिसकी श्रद्धा और विश्वास अपने सतगुरू पर हैं उसका जीवन सफल हो जाता है। मेरे गुरू पर मुझे श्रद्धा और विश्वास था। मैंने अपने गुरू के लिए कभी भी नहीं सोचा कि ये जूई के अहीर हैं।

अगर आज वे यहां होते तो क्या बात थी? ठीक है वे सूक्ष्म रूप से मेरी मदद करते हैं। उनकी दया मेहर है। पर स्थूल की भी जरूरत होती है। मेरे सतगुरू कुल मालिक थे। कोई बात होती तो मैं कहता कि—

मुझे प्यारा लागै हे जूई का हीर।
दुनिया तो हीर कहै, मेरा वह सतगुरू मुर्शद पीर।।

वह तो मेरा मुर्शद है, पीर है। मेरा मालिक है। मैं यह कहता हूं कि भाव मुनाफा देता है। उसी गांव के लोग अब तक भी नहीं समझे कि वे क्या थे? मैं खुद ही देखने वाला और जानने वाला हूं। हम जाया करते थे और उस गांव के लोग कहा करते थे मास्टरड़ा! के बात सै। मेरे गुरू महाराज को इस तरह बोला करते थे। पर उन लोगों ने क्या फायदा उठाया? वे तो कोरे पशु के पशु ही रह गए। उन के परिवार में भी किसी ने फायदा नहीं उठाया। न ही उस गांव में कोई ऐसा आदमी हुआ जिसने फायदा उठाया हो। कोई भी नहीं है। नाम तो बहुतों ने लिया।

ऐ सत्संगियो ! नाम लेने से कोई भी नहीं तिरता है। बल्कि कबीर साहब बोध सागर में कहते हैं, यह मैंने किसी से सुना था कबीर साहब ने लिखा है कि एक जीव को नाम दिवा दे तो लाख गऊओं को हत्थे में से निकालने जितना पुण्य होता है। स्वामी जी भी कहते हैं कि नाम दिलाना बहुत अच्छा है। काफी लोग नाम लेकर नाम को भी बरबाद कर देते हैं। घटिया–घटिया काम करना शुरू कर देते हैं। अब। वे तो फिर भी कह देते हैं कि नहीं वह अंकुरी हो जाता है और अगले जन्म में फिर सुधर जाता है। या उससे अगले जन्म में सुधर जाएगा। वह जरूर ही सुधर जाएगा। कबीर साहब कहते हैं—

सोना काई ना लगे, लोहा घुण नहीं खा।
बुरा भला जो गुरू भक्त कबहूं नर्क नहीं जा।।

वह सुधरने वाला कौन है? कबीर के दो दोहों की टक्कर हो जाती है (विरोधामास है)। एक तो कहता है—

बुरा भला जो गुरू भक्त, कबहुं नर्क नहीं जा।

अब आप लोग कहोगे कि हम तो बच गए। दूसरा दोहा भी तो

सुनोगे या नहीं? कबीर साहब कहते हैं—

गुरू द्रोही, मनमुखी, नारी पुरूष विचार।
ये तो जांगे नर्क में दिवा शशि कार।।

अब एक जगह तो कहता है कि—

सोना काई नहीं लगे, लोहा घुण नहीं खा।
बुरा भला जो गुरू भक्त कबहु नर्क नहीं जा।

सोना कितने ही दिन पानी में पड़ा रहे उसको काई नहीं लगती। लोहे को जंग तो लगता है पर घुण नहीं। यह बात मैं भी कहता हूं कि गुरू भक्त कभी भी नर्क में नहीं जाता। गुरू भक्त में और मनमुख द्रोही में इतना ही फर्क है जितना रात का और दिन का होता है। गुरू द्रोही, मनमुख यदि रात है तो गुरू भक्त दिन है। उसकी पहचान क्या है? उसकी बड़ी भारी पहचान है कि गुरू भक्त कभी भी गुरू की निंदा नहीं सुन सकता। निंदा सुनने से उसे डर लगता है। यदि वह खड़ा हो जाता है तो डिग जाता है। मैं एक बात बताता हूं कि—

जैसा ख्याल होता है वैसा ही हाल हो जाता है।

मेरे पास एक प्रेमी आया। कई दिनों की बात है। कई बैठे थे वे कहने लगे कि यह तो गुरू द्रोही है। यह तो बहुत गंदा है। आज यह कहां आ गया? फिर वह एक की खाट पर बैठ गया। उसने शोर शराबा कर दिया। उससे लड़ाई कर ली कि तू उठ जा, तू तो गुरू द्रोही है। मुझे पाप चढ़ जाएगा। तुम इसे सच मानना कि उसको 10–20 मिनट के अंदर–अंदर ही सर्दी के साथ ऐसा बुखार चढ़ा कि वह घबरा गया। बुखार क्यों चढ़ा? क्या उसने उसके पाप ले लिए? हां, बिल्कुल! उसके दिल में ख्याल बन गया कि गुरू द्रोही, मेरी खाट पर बैठ गया तो मैं पापी ही बन गया। मैं जुल्मी बन गया। क्या गुरू द्रोही किसी के भी पास नहीं बैठते हैं? जिनके दिल में ख्याल आ जाता है उनको दुख हो जाता है।

पर क्या हुआ? आप यह कहोगे कि यह तो ख्याल ही हो गया। नहीं उसके ख्याल ने ही घंटे दो घंटों के बुखार ने उसके सारे ही कर्म काट दिए। जब बिमारी कोई आती है, मालिक भेजता है तो यह मत सोचो कि यह बिमारी क्यों आई? यह बिमारी तो हमारा भला करने के लिए आती है। वह यह चेताने के लिए आती है कि बिमारी आ गई तो वह परमात्मा को याद कर लेगा।

एक बार की बात है। मेरे ऊपर कोई दुख आ गया था। मैंने परमात्मा को इतना याद किया। बड़ा भारी याद किया। मैंने ऊँट की पूंछ पकड़ रखी थी, पैदल जा रहा था। पैदल 20–30 कोस जाना था। राम को याद करता जा रहा थां जब मैं अगले ठिकाने गया तो राम ने मेरी मदद कर दी। आगे बहुत बड़ा अफसर था। उसने जाते ही कह दिया कि इसको क्यों लाये? उन्होंने कहा—यह उसका बेटा है। उसने कहा—फिर यह क्या जानता है? भेज दो इसे तो कभी भी नहीं लाना था। उन पर डांट मारी। मैंने कहा—मेरे राम ने मेरी मदद कर दी। तुम उस परमात्मा को याद नहीं करते। दुख आता है उस वक्त याद करते हो। सुख में भूल जाते हो। अगर तुम परमात्मा को याद करो तो दुख तुम्हारे नजदीक ही नहीं आएगा। पर बात सोच लेना। जिसने खोटा कर्म कर लिया और फिर तुम याद करोगे तो उसका दण्ड तो भोगना ही पड़ेगा। मेरे ऊपर तो बेमतलब का ही दुख आ गया था। एक तो बेमतलब का दुख आता है और एक तुम नुकसान कर देते हो। कोई लड़की को जला देता है। कोई किसी को अपने लालच के लिए मार देता है। फिर अगर विनती करोगे तो वह पाप हल्का हो जाएगा फिर जो बाकी रह जाता है वह सारी जिन्दगी कष्ट देगा। वह तो जितना कट जाता है उतना ही अच्छा है। राम और भरत जब गए तो उस वक्त, रामायण में आया है, आपने भी सुना होगा कि उसने कहा कि मैं नहीं बोलता इस माता से। राम ने कहा कि

अरे पगला ! इतनी सजा जब इसको मिल गई तो इसका सारा पाप बंट गया। सजा में ही तो सब कुछ आ जाता है। कर्म कट जाते हैं। मैं पढ़ा लिखा नहीं हूं। मुझे इस तरह की सुनी हुई बातें याद रह जाती हैं। तो आपने इसे समझा है कि–

गुरू द्रोही और मनमुखी नारी पुरुष विचार।
ये तो जांगे नरक में, दिवा शशि कार।।

गुरू द्रोही किसे कहते हैं? आप को पता है कि गुरू से द्रोह करने वाले न्यारा पंथ भी चला लेते हैं। फिर वे सड़कर मरते हैं। मनमुखी वही है जिसने अपनी मन मर्जी से न्यारा पंथ बना लिया है और न्यारा ही नाम बना लिया है। उनको न कभी शांति मिली है और न उनको कभी मिल सकती है। आपने देखा है कि जितने संत आए हैं गुरूमुख होकर ही आए हैं। जो गुरूमुखों से न्यारे हुए, वे सभी मनमुख हो गए। आप कहोगे कि क्या आपने नहीं कहा एक दोहा। सो मैंने तो नहीं कबीर साहब ने कहा है कि कितना ही बुरा और गंदा क्यों न हो वो गुरूमुख ही माना जाता है जो गुरू की निंदा नहीं सुनता है गुरू की वह बुराई नहीं सुनता है। किस गुरू की? यह मैंने आपको काफी बार समझाया है कि सतगुरू किसको कहते हैं, सतगुरू वही है जिसका शब्द खुल गया है। जिसने उस शब्द की कमाई कर रखी है। जो शब्द की कमाई करता है। वह अपने गुरू से बाहर नहीं जा सकता है। जिसने शब्द की कमाई कर ली वह अपने गुरू की बख्शीश व दात को कभी भी छोड़ नहीं सकता है। पर ये भी ख्याल रखना कि सतगुरू की दात कौन सी है? सतगुरू की दात सतलोक से नीचे नहीं है। सतलोक से ऊपर की जितनी मंजिलें हैं, वे सतगुरू की दात ही तो हैं। इनमें पहुंचने वाला ही गुरूमुख माना जाता है और वही करनी करता है। अब आप चक्कर में न पड़ जाना। मेरी बात ही ऐसी अटपटी है कि गुरूमुख उसी को कहते हैं कि कभी भी गुरू की निंदा न सुने। ईशू

मसीह भी बाईबिल में कहते हैं कि जो शब्द की निंदा करता है उसको मेरा पिता कभी नहीं बख्शेगा। सो जो गुरू की या शब्द की निंदा करता है, उसको राधास्वामी दयाल, वह सत कबीर, वह दादू, पलटू, नानक साहब वे कभी भी नहीं बख्शेंगे। इनके शब्दों को छोड़ कर जो न्यारी लाइन बनाता है, उसको भी वे नहीं बख्खेंगे। उनको दंड मिल जाता है। वे काल के एजेन्ट माने जाते हैं। वे काल के दलाल माने जाते हैं। हम उसी प्रणाली के हैं जिसके कबीर साहब, दादू, पलटू, नानक थे। मैं तो उनका ही बेटा–पोता हूं। उनकी लाइन न तो मुझसे छुट सकती है और न मैं छोड़ता हूं। न मैं अपने गीत ही गाता हूं। मैं तो उन्हीं के गीत गाता हूं और आप लोगों को उन्हीं की लाइन बताता हूं। वही अपना काम करके जाते हैं। इसको कहते हैं कि कोई कितना ही बुरा हो यदि वह गुरूमुख है तो कभी भी नर्क में नहीं जा सकता। जैसे कहा था–

सोना काई ना लगे, लोहा घुण नहीं खा।
बुरा भला जो गुरू भक्त, कबहू नर्क नहीं जा।।

गुरू का जो भक्त होता है वह नर्क में जा ही नहीं सकता। फिर सुनो। गुरू भक्त किसे कहते हैं? जो बनावटी नाम बनाते हैं वे गुरू भक्त नहीं है। गुरू भक्त कौन है? जो अंतर की मंजिलों का वाकिफकार है उनको समझ जाता है तथा उन पर जाता है और उन धुनियों का वाकिफकार है, वही सतगुरू का असली प्यारा है। वही गुरूमुख माना जाता है। देह से कोई भी काम हो जाता है तो दण्ड भोगता है पर वह नर्कों में नहीं जाता है। जो नर्कों से बचता है वह शब्द की कमाई करने वाला। शब्द तो एक वैतरणी नदी है जैसे गंगा–यमुना और सरस्वती कहते हो। ये दरिया भी पथ्वी पर बहने वाली हैं वह शब्द भी सारी ही दुनिया में बहनें वाला है। शब्द की बड़ाई सभी ने की है और वह शब्द सारी दुनिया की जान है।

सो वह गुरूमुख कभी भी काल के मुंह में नहीं जाता है। पर अगला दोहा भी कबीर का ही था। वे कहते हैं कि गुरूद्रोही और मन मुखी, नारी पुरूष विचार। मतलब स्त्री और पुरुष दोनों ही विचार कर लें कि गुरू से द्रोह करने वाले जो पहले नाम ले लेते हैं और नाम भी मैं कौन सा बताता हूं? मैं उन नामों की बड़ाई करता हूं जो टकसाली नाम हैं। जो परम्परा के नाम हैं जो सारी ही दुनियां की जान हैं। मैं कोई बनावटी नामों की बातें नहीं करता हूं और राधास्वामी नाम कोई बनावटी नाम नहीं है। यह टकसाली नाम है। यह वह टकसाली सिक्का है जो पथ्वी से पहले भी था अब भी है और आगे भी रहेगा। यही नाम नानक साहब का, दादू, पलटू और कबीर सभी का भी था। जो वर्णन कर देता है और जो इसे समझ जाता है वह फिर काल के जाल में नहीं आता है। पर ये लोग नाम तो समझते नहीं हैं। सतगुरू को समझते नहीं हैं। नाम ले लेते हैं और गुरू द्रोही बन जाते हैं। गुरू से द्रोह करना भी शुरू कर देते हैं। कौन सा द्रोह? उसका खण्डन और बुराइयां करना शुरू कर देते हैं। मुझे कितने वर्ष हो चुके हैं सत्संग करते? मुझे आज तक किसी की निंदा करते सुना हो तो मैं पापी हूं। मैं अपनी तरफ से निंदा नहीं करता हूं। सीधी जो बात होती है वह कह देता हूं। मैं किसी की निंदा क्यों करूं? पर जो लोग निंदा करते हैं वे खुद ही गिर जाते हैं। उनमें गिरावट आ जाती है। आप देखते हैं कि वे बड़े—बड़े आदमी जिन्होंने महात्माओं की निंदा की वे खुद ही गिर गए। एक वक्त ऐसा था कि यहूदियों का राज था, सारी दुनिया में उनका सिक्का बैठा हुआ था। उन्होंने ईशा मसीह के साथ ऐसा व्यवहार किया कि उनको गुलमेखे ढोंक दी। उनको मार दिया। उनको दुखी किया। उस ऋषि का ऐसा श्राप लगा कि आज यहूदियों के दो घर भी इकट्ठे नहीं मिलते हैं और ईसाई धर्म हर जगह फैल गया है। आपने सुना है—

संतों की निंदा करै मूर्ख काढ़ै खोट।
बिन मारे मर ज्यांगे, पड़े गजब की चोट।।

संतों की बातें बताता हूं, असंतों की नहीं कहता। असंत तो विषय विकारों के कीड़े बन जाते हैं और दूसरे लोग उनको खत्म भी कर देते हैं। उनके खोटे कर्म ही उनको मरवा देते हैं। सो उनको संत न कहो। असंत कहो। संत का दर्जा तो बड़ा ऊंचा होता है। फिर मेरा एक ही प्रसंग रह गया था जिस पर बात करनी थी, वह है गुरू द्रोही। गुरूद्रोही तो उसे ही कहते हैं, जिसे पूर्ण सतगुरू मिल जाता है और वह उसका विरोध करे या उसके विरोधियों का साथ दे। जैसे ईशा मसीह को एक उनके शिष्य ने ही पकड़ कर मरवा दिया। गुलमेख ठुकवा दी। वह गुरू द्रोही था। और दूसरे भी हैं। नानक साहब महाराज के चेले अंगद साहब थे, वे गुरू मुख थे। उनके बेटों ने उनसे मनमुखता कर ली। वे कौन से पार हुए? वे निर्मले सन्यासी बनकर वेदांत में ही जा फंसे। मैं किसी की बुराई नहीं करता हूं। गुरू नानक साहब तो परमसंत आए थे और उनके बेटों ने न्यारा मत चला लिया। उनमें एक निर्मले बन गए और एक उदासी बन गए। यही राधास्वामी दयाल की वाणी है। उनके राधास्वामी धाम को आगरा में जाकर देखो। उनके ही परिवार वालों ने, उनके भाइयों ने दो—तीन मत अपने ही चला लिए। पर वे राधास्वामी नाम को नहीं समझ सके। स्वामी जी महाराज ने कहा है—राधास्वामी नाम चारों युगों का है और इसी नाम से उद्धार होगा। अगर ये गुरू के कहे पर चले तो ये अपने पेट और रोजगार की तरफ नहीं ले जाएंगे। सतगुरू तो कमाकर खाता है। जब ये मनमुखता की तरफ चल पड़ते हैं तो अपना रोजगार बनाना शुरू कर देते हैं। फिर ये कहते हैं कि अब तो लाग्या दाव। यह नहीं पता कि—

लेखा पाई–पाई का, राज नहीं कोको बाई का।

गुरूमुखों की महिमा ही न्यारी है। आप ने सुना है–

गुरूमुख की गति बड़ी भारी।
गुरूमुख कोटिन जीव उभारी।।

अर्थात एक गुरूमुख करोड़ों जीवों का उद्धार कर सकता है। सो मैं कह देता हूं कि नाम मत लो। नाम लो तो चौकस होकर लो। कई भाई आते हैं, मैं नेम कराता हूं फिर भी शराब पी लेते हैं। वे कहते हैं कि हम मर गए। हम लुट गए। मैं पूछता हूं कि तुमने नेम तोड़ दिया और फिर भी जिन्दा हो? ये नाम लेने के लिए किसी ने बुलाए तो नहीं थे। मैंने जत्था तो नहीं बनाना है। मैंने मजहब तो खड़ा नहीं करना है। मैं तो आप लोगों से यह बात कहता हूं कि जिस घर से तुम्हारी सुरत आई है उस घर में पहुंच जाओ तो शान्ति मिल जाएगी और तो कहीं भी इस दुनिया में शान्ति नहीं है। उस घर में पहुंचने के लिए पहले आप लोगों को शराब छोड़नी पड़ेगी। उस घर में पहुंचने के लिए मीट छोड़ना पड़ेगा। उस घर में पहुंचने के लिए चोरी, जारी, बदमाशियां छोड़नी पड़ेंगी। अगर शौक हो तो आइए और शौक न हो तो नजदीक न आना। क्यों जबरदस्ती पकड़ो? आगे फिर नर्कों का मुंह देखोगे।

सो तुमने सुना है कि गुरू द्रोही तो वही बनता है जिसने गुरू से नाम ले लिया है और अपनी मर्जी करता है। मनमुखी भी वहीं बनता है जो नाम लेकर अपनी मर्जी से काम करता है। तो मनमुख और गुरूद्रोही का कभी भी उद्धार नहीं हुआ है। जब तक सुरत रहेगी वह नर्क का अधिकारी रहता है। और भी महात्मा ये बातें कह देते हैं। सो बचकर ही रहना चाहिए। किसी के साथ जबरदस्ती नहीं होती है। मैं तो थोड़ी सी बातें बताना चाहता था पर सत्संग चल पड़ा। सो गुरू की मेहर और दया होती है।

सतगुरू राजी तो कर्ता राजी।
काल कर्म की लगे न बाजी।।

जब सतगुरू खुश होता है उसके सभी कर्म कट जाते हैं। आपने सुना है–

मेरे धरा शीष पर हाथ, मेरे सारे कर्म कट गए री।

सतगुरू जब शीष पर हाथ रख देता है तो सारे ही कर्म कट जाते हैं। कोटि जन्मों के पाप कट जाते हैं। जैसे चुंबक लोहे को खींच लेता है इसी तरह सतगुरू का हाथ उसके पापों को खींच लेता है। जैसे कुत्ते व बिल्ली की जीभ में ताकत होती है। वे अपने घाव को आप ही भर लेते हैं। इसी तरह से सतगुरू के हाथ में ताकत होती है। उसके खोटे कर्मों के घाव को मरहम लगा देता है। उनके हाथ में दया, मेहर होती है। काफी लोग पांव को चिमट जाते हैं। ये तो पुराने रस्म–रिवाज हैं। ताकत तो हाथ ही में होती है। आप देखो हाथ में कितनी ताकत है? कोई बच्चा रोता है उसको पांव लगाओ वह कभी भी रोना बंद नहीं करेगा। या सिर लगाइए, रोना बंद नहीं करेगा। उसके सिर पर हाथ रख दीजिए वह रोना बंद कर देगा। इसी तरह से और भी कोई दुखी होता है। उसको पुचकारो, उनके सिर पर हाथ रखो। शांति आ जाती है। अगर पांव से ठुकराना शुरू कर दोगे तो शांति नहीं आएगी। आने वाले को यह तो एक नमन (नमस्कार) हो जाता है कि चरणों में सिर झुकाते हैं। ये बड़े हैं। सो जो छोटा बनता है वही फिर बड़ा बन जाता है। जो बड़ा बनता है वही फिर छोटा बन जाता है। इसीलिए–

छोटा सा होकर रहना जगत में,
तज दे न गर्व गुमाना हो।

सो छोटे से होकर रहो। छोटे को सभी नमन करते हैं। छोटे बच्चे को तो कोई भी गोद में उठा लेता है। बूढ़ों को कौन उठाता

है? इन का कोई भी वाली वारिश नहीं है। घर के बच्चे भी इनको भगा देते हैं। कहते हैं कि जा तू हमारे काम का नहीं रहा। आपने सुना होगा—

मात—पिता भी इतनै प्यारे धंधा पीटै सारा।
काम कर्म से बनें निकम्मे पुत्र दें झलकारा।।

अर्थात् जाओ चले जाओ, हमारे काम के नहीं रहे। अब वे भी काम के नहीं रहते हैं। फिर बताइए कौन काम का रहेगा? इसीलिए संतों का दरबार है सब की हाजरी देता है और वह सब को खुश रखता है। सब से प्यार करता है और सभी को आदर के साथ संभालता है। संत संत ही होते हैं। मैं संत नहीं हूं। संतों का सेवक हूं। आप लोगों की हाजरी बजाता हूं। गुरू महाराज का हुकम था। डियूटी बजा देता हूं। सो मैं यहां बैठा हूं, अपनी मर्जी से नहीं बैठा हूं। अगर मैं स्टेज पर बैठा हूं तो यह मेरे ही सतगुरू का काम है। उनकी दया है। आप लोगों का सहारा है। आप लोगों का क्या सहारा है? मैं तो यही सोचा करता था कि अगर कोई बात गलत हो गई तो मेरे सत्संगी भाई मुझे क्या कहेंगे? इन की भी तो गर्दन नीची हो जाएगी। बस, इसी शर्म से मैं बचता रहा। आप लोगों ने ही बचाया। इन मेरी बहनों ने बचा लिया। मैं तो गिलोय बेल के समान था जो नीम पर चढ़ी थी। जवान भी था और जाट के घर का जन्म भी था और फिर पढ़े लिखे में तो कई ताकत भी होती हैं मैं तो अनपढ़ भी था। हर तरह से ही किसी काम का नहीं था। फिर भी आप लोगों की दया से सतगुरू की हाजरी बजाता रहा। उनकी डियूटी भी बजा दी। यह मेरे सतगुरू की दया है। उन्हीं का भरोसा है।

ऐ सत्संगियो ! अगर तुम मेरी बातों को समझ गए तो तुम्हें ज्यादा भजन की भी जरूरत नहीं है, तुम्हारा उद्धार हो जाएगा। अगर तुम मेरी बातों को भी नहीं समझे तो धक्के खाते फिरोगे।

फिर एक नहीं चाहे हजारों गुरू बना लेना। सतगुरू नाम तो शब्द का है। सतगुरू नाम ज्ञान का, समझ और विवेक का है। अगर इन बातों को समझ गए तो समझ गए नहीं तो सारी ही जिन्दगी बरबाद हो जाएगी। क्या मिलेगा? धक्के खाते रहना कुछ भी नहीं मिलेगा। सो मैंने थोड़ी बातें आप लोगों को बताईं। चाहे तुम गुरूमुख बन जाओ, चाहे मनमुख बन जाओ। गुरूमुख बनो तो चाहे तुम कुछ भी करते रहना, एक दिन तुम तिर जाओगे और मनमुख ही बनोगे तो चाहे हजारों मालाएं फेरते रहो और हजारों दान करते रहो कभी भी उस घर नहीं पहुंचोगे, बल्कि ऊंची योनि से नीची योनि में चले जाओगे। आप कहोगे कि यूं कैसे कहते हो? ऊंची से नीची योनि में चले जाएंगे? हां नीची में जाओगे, तुम्हारे ही शास्त्र कहते हैं—**राजा नग करोड़ों गौ दान किया करता था वह गिरगिट बना।** बोलो फिर मैंने कोई बुरी बातें तो नहीं कहीं। तुम्हारी ही भागवत कहती है। मैं तो नहीं कहता हूं। सो दान भी तो दान के ढंग से ही दिया जाता है। माला फेरना भी तरीके से होता है। जमींदार का बेटा खाई खोदने लग जाता है। अगर वह सीधी ही खाई खोदता रहेगा तो पानी नहीं निकाल सकेगा। अगर टिब्बे की जगह है और शाम को आंधी आ जाए तो उसकी सारी खाई ही बन्द हो जाएगी। सारी जमीन सुबह समतल मिलेगी। इसी तरह सुरत—शब्द के अभ्यास के बिना कितने ही जप—तप, पूजा—पाठ करते रहो ये तो मरूस्थल में सीधी खाई खोदनी है, जो आंधी आते ही भर जाएगी। ऐसे ही ये कर्म आखरी समय पर मदद नहीं करते हैं। आखरी टाइम में तो सतगुरू ही मदद करता है। कौन सा सतगुरू मदद करता है? वही सतगुरू जो शब्द भेदी है। जिसने शब्द की कमाई की है।

शब्द गुरू चित्त चेला, संतों ने दिया हेला।

उस शब्द से ही तो काम बनता है। उससे बेड़ा पार हो जाता

है। सो जो उस शब्द की शरण में चला जाता है उसका उद्धार हो जाता है। शब्द की कमाई करना सीखो। यह एक सब से बड़ा रत्न है। सबसे बड़ी बात है। नाम लेने की कोशिश मत करो। इतनी जल्दी में अगर नाम लेते हो तो पूरा निभाने की कोशिश करो। मैंने आप लोगों को बता दिया है कि कई लोग इस तरह से बैठे—बैठे ही नाम दे देते हैं। वे पूछते हैं कि नाम लेना है क्या? दूसरे कहते हैं—हां। उनको वह कहता है कि तुम ऊपर हाथ करो। वे ऊपर हाथ कर देते हैं। वे कह देते हैं कि अच्छा! यह नाम देता हूं इसे जपा करो। सो मिल गया नाम। फिर वे लोग वहीं बंध जाते हैं। बताओ, अब वे किस तरह से अपने घर पहुंचेंगे। वे दोनों दीन से चले जाएंगे।

दोनों दीन से गए पांडे, हलवा मिला न मांडे।

बेचारे क्या बने? सो आप लोगों को एक इशारे से बातें बताता हूं—

सतगुरू खोजो हे प्यारी, जग में दुर्लभ रत्न यही।

सतगुरू की खोज करो, जग में यही दुर्लभ रत्न है। इस रत्न के मिलने के बाद दूसरे सभी रत्न फीके पड़ जाते हैं। पर मैं क्या बताता हूं। मैं तो अपने गुरू की डियूटी बजाता हूं। उस डियूटी के सहारे पर आपको शिक्षा देता हूं। एक बात कह देता हूं। मेरी वह सीधी बात सुन लो। मैं संगत के बीच में कहता हूं। जिससे शराब नहीं छुट सकती है वह नामदान लेने के लिए मेरे पास मत आ जाना। जो शराब नहीं छोड़ सकता वह नामदान लेने के लिए मत आना। उसका सत्यानाश हो जाएगा। अगर बाद में शराब पी ली तो मेरी बात को आप समझते हो—

संत वचन पलटे नहीं, पलट जाए ब्रह्मण्ड।
रवि का तेज घटे नहीं, जुड़ आवे घन घमण्ड।।

साधु बोले सहज स्वभाव,
साधु का कहा मिथ्या नहीं जा।

अगर कोई नाम लेने के लिए आता है तो पहले यह एक नेम करके आना। मैं छंटनी नहीं करूंगा यह भी कह देता हूं। पर मन में नेम करके ही आना कि मैं जिन्दगी भर शराब नहीं पीऊंगा। जिसके दिल में इतना यकीन व पक्का विश्वास हो वह नाम लेने के लिए आ जाना। नहीं तो नाम नहीं लेना। वह नाम तुमको खा जाएगा। कच्चा पारा जिसे भी खिला दिया जाता है वह फूटकर ही निकलता है। वह अधमौत मर जाता है। पारा अगर पका लिया जाता है तो अमत बन जाता है। मुर्दे को भी वही पारा बुला देता है। ये बातें वैद्य जानते हैं। इसी तरह अगर मेरा वचन तोड़ दिया तो कच्चे पारे की तरह सत्यानाश कर देगा। अगर मेरे वचन को पूरा निभा दिया तो मुर्दे को जिन्दा कर देगा। यह कौनसी जिन्दगी देगा? दुनिया में इज्जत मिलेगी। निर्धन को धन देगा। शरीर निरोग रहेगा, बिमारियां दूर हो जाएंगी। सो तुम्हें इज्जत और धन मिल जाएगा और शरीर निरोग हो जाएगा। ये तीन चीजें आपको आर्शीवाद में मिल जाएंगी। यह आप लोगों को बता दिया है। इन बातों को मंजूर करते हो तो आ जाना। वरना मत आना। ये मेरी सीधी सी बातें हैं। माई—बाई भी अगर नाम लेने के लिए आएं तो बिल्कुल ठीक है। हम कुंवारी लड़कियों को नाम नहीं देते हैं। ये तो घटिया आदमियों के ही काम होते हैं। कुंवारी लड़की को नाम नहीं देना चाहिए क्योंकि कई एतराज कर देते हैं। एक लड़की मेरे पास आई। पढ़ी लिखी थी बोली कि कुंवारी लड़की को नाम क्यों नहीं मिलता है? मैंने कहा—बहन जी ! बतांऊ, शादी ऐसी जगह भी हो सकती है, वे शराबी—कबाबी हो सकते हैं। तो फिर मेल नहीं बैठता है। सारा सांग ही बिगड़ जाएगा। सो हम कुंवारी लड़की को नाम नहीं देते हैं। बल्कि शादी हो जाती है तब आपको

उसके विचारों का पता होता है और आपका जीवन ठीक बना रहता है नहीं तो बिगड़ जाता है। आपको मैं एक मिसाल देता हूं। जो आगरा की बूआ जी थी वह बहू कहलाई। उसकी शादी काटा बांझी में एक तिवाड़ी से हो गई। वह गुरूमुख नहीं था। उस बूआ की गुरूवाई कहां गई? ऐसा न हो कि यहां कोई आगरा का सत्संगी चिढ़ जाए। मैं भी उसी घर का सत्संगी हूं। पर मैं ऐसा आदमी हूं, पहले अपना मुंह काला करता हूं फिर दूसरे की बातें कहता हूं। ये बातें आज तक तुमने सत्संगों में नहीं सुनी होंगी। मैंने तो तुम्हें तसल्ली दिलाने के लिए ये बात बताई है। जब तक वह कुंवारी रही तब तक तो गुरू बनी रही। फोटो लगे रहे। जब वह जाती रही तो उस जगह उनका फोटो उतार दिया गया। वह गुरूवाई कहां गई? सो कुंवारी लड़की को नाम देना लेना अच्छा नहीं है। जो जिद्दी करती हैं तो उनकी मर्जी है। कोई बात नहीं है। पर जिसकी बात चल सकती हो और अच्छे काम करती हो, ठीक हो, तो दूसरी बात है। नहीं तो आगे दुख हो जाता है। मैंने तो एक मिसाल देकर यह बात बताई है। और भी कई ऐसी मिसालें मिल जाती हैं। हमारा नाम भी ऐसा है जो स्वामी जी के समय पर दिया जाता था। पर जिससे शराब न छुट सकती हो वह नाम के लिए न आ जाना। आगे मैं और बात नहीं कहूंगा। जो कबीर साहब के वक्त में नाम दिया जाता था वही नाम दिया जाता है। उसी तरतीब और उसी ढंग से। हम एक या दो मंजिल नहीं बताते हैं और न ही सतलोक बताते हैं। सारी ही मंजिलों का निर्णय करके ढ़ाई—तीन घंटे नाम देने में लग जाते हैं। पांच मिनट में नहीं दिया जाता है। पर यह भी बता देता हूं कि इतनी चीजों का परहेज जरूरी है। पर सबसे बड़ा परहेज शराब का है। सो शराब का छोड़ना जरूरी है तुम आर्य हो और सनातन धर्म को जानते हो। संतमत को और आर्य धर्म को जानते हो। ढोलकी बजाने से आर्य

धर्म नहीं फैल सकता है। आर्य धर्म तो करणी से फैलता है। जब करणी ही नहीं करोगे तो क्या करोगे? सो करणी करना सीखो।

ये करणी का भेद है, नहीं बुद्धि विचार।
बुद्धि छोड़ करणी करो, तब पावै कुछ सार।।

ये तो करणी का मार्ग है। करणी करोगे तो जो बाहर बातें सुनते हो अंतर में भी देख लोगे। ऐसी बातें तो हैं नहीं कि सारी ही दुनिया झूठ बोलती है। संत सच्ची बात ही कहते हैं। सच्चाई पर ही वे चलते हैं और सच्चाई पर ले जाते हैं। सच्चाई होनी चाहिए। सच्चाई तुम्हारा उद्धार कर देगी।

।। राधास्वामी।।

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

जुलाई/अगस्त मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1	हांसी	19 जुलाई-25 जुलाई
2	पुट्ठी सामाण	26 जुलाई-01 अगस्त
3	मोट	02 अगस्त-08 अगस्त
4	अण्टा	09 अगस्त-15 अगस्त
5	बरवाला	16 अगस्त-22 अगस्त

अहंकार क्या है? यह एक तरह से गुबार का रूप है, जो मन से निकलता रहता है और दर्पण को ढक लेता है। यदि दर्पण साफ हो तो उसमें अपना रंग रूप दिखाई दे और आदमी पथ भ्रष्ट न हो। मगर जब वह घमण्ड करता है यह धार उसको काला बना देती है। इसका गुण यही है कि इसमें अपना प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ जाता है मगर जब तुम इस पर फूंक मार देते हो तो फिर इसकी स्वच्छता छिप जाती है और कुछ दिखाई नहीं पड़ता इसको तुम स्वयं करके देख सकते हो। यह गुबार और फूंक ऊपर के लोको में माया कहलाती है और नीचे के लोकों में वहीं अहंकार है। इसके विरोध को मन का निर्मल करना कहते हैं व इसी को प्राणायाम कहते हैं। इसी का साधन प्राणायाम योगी करते हैं। फिर चित्त पर चोट लगाने की आवश्यकता नहीं रहती, क्योंकि चोट लगते ही इसमें अहंकार की धार निकलनी आरम्भ हो जाती है। केवल सांसारिक पदार्थों में इन्द्रियों को रोकने या दमन की आवश्यकता है। यहां इस साधन में दढ़ता आने लगी चित्त साफ और सुथरा हो जाता है मगर अपने आपको समझना कोई सरल नहीं, इसके समझने में अहंकार आ जाता है और वह अपने को सब में व्यापक देख और समझ कर सूक्ष्म अहंकार का शिकार हो जाता है और रात-दिन "मैं-मैं" किया करता है, जो वास्तव में पथ भ्रष्टता है।

जब मैं था तब गुरु नहीं, जब गुरु हैं मैं नाहं।
प्रेम गली अति सांकरी, ता मैं दो न समायं।।

जब कोहरा होता है तो पथ्वी और पथ्वी के ऊपर की वस्तुयें दिखाई नहीं देती है और जब साफ हो जाता है तो हर वस्तु अपने रंग रूप में दिखाई देती है। समुद्र में भाप उठ रही है। उसमें समुद्र दिखाई नहीं देता है और मूर्ख आदमी समुद्र को न देखकर

उसी की ओर चले जाते हैं और उसमें गिर कर मर जाते हैं।

मनुष्य का मन समुद्र है और उसमें जो भाप उठ रही है वहीं अहंकार अज्ञानता का पर्दा है। जिस पर पड़ गया फिर वह क्या देखेगा। इसको न अपनी समझ बूझ होगी और न दूसरों की। इसको अज्ञान कहते हैं। लोभ और मोह से फिर भी छुटकारा मिल जाता है मगर अहंकार से बचना कठिन काम है। यही मान-बड़ाई का ख्याल देता रहता है। बड़े-2 ज्ञानी लोग इसके हाथ से मारे गये और मारे जा रहे हैं। इससे बचने का कोई उपाय हाथ नहीं आता।

कहानी — गन्दा पानी

संत तुकाराम गंगा स्नान करके आ रहे थे। रास्तें में एक औरत ने उन पर गंदा पानी फेंक दिया। वह दोबारा स्नान कर आए। जब फिर उधर से निकले तो उसने, फिर उन पर गन्दा पानी फेंका। तुकाराम जी तीसरी बार स्नान कर आए। इस बार जब उधर से गुजरे तो वह औरत सामने आई और उनके चरणों में गिर पड़ी और कहने लगी —"महाराज मैंने बार-बार आपका निरादर किया परन्तु आप गुस्से में नहीं आए। मुझे क्षमा करें !"

संत ने मुस्करा कर कहा —"माता मैं तो आपका आभारी हूं। आपकी वजह से मुझे तीन बार गंगा स्नान का पुण्य प्राप्त हुआ है। रोज तो मैं केवल एक ही बार स्नान करता हूं।" उस मुसलमान बुढ़िया ने उनसे बार-बार क्षमा याचना की तथा उनकी सहनशीलता को बेहद सराहा।

अनमोल वचन

- यदि संसार में कोई दुर्लभ वस्तु है तो वह पूरा गुरु है, मुर्शिदे-कामिल है। जिनको पूर्ण गुरु नहीं मिला वे अन्धे आये और अन्धे ही चले गये। — *कबीर साहब*
- हमारा शरीर परमेश्वर के रहने का हरमन्दिर है। हमें इसके अन्दर मांस, अण्डे, शराब आदि डालकर इसे गन्दा और अपवित्र नहीं करना चाहिये। — *महाराज जगत सिंह जी*
- हत्या न करो और न ही मासूम पशुओं आदि का शिकार करके उनका मांस खाओ, नहीं तो तुम शैतान के गुलाम बन जाओगे। — *हजरत ईसा*
- हमारे वचनों के द्वारा किसी का दिल न दुखे, हमारे मन में किसी के प्रति विष अथवा द्वैष न भरा रहे और हमारे कर्म से किसी जीव को कष्ट न पहुंचे। यह मन, वचन और कर्म की अहिंसा है। — *गुरु नानक देव जी*

ज्ञान-सार

- पैसों को तो तिजोरी में बन्द करके रखा जा सकता है, पर समय को बन्द करके नहीं रखा जा सकता। अतः अपने अमूल्य समय को व्यर्थ के कामों में खर्च नहीं करना चाहिये।
- देखने में तो ऐसा दिखता है कि समय जा रहा है, पर वास्तव में शरीर जा रहा है।
- साधक को विचार करना चाहिये कि अगर मेरे द्वारा किसी को लाभ नहीं हुआ, किसी का हित नहीं हुआ, किसी की सेवा नहीं हुई तो मैं साधक क्या हुआ।

भाग - 3 2-5-2004

कौन कहता है कि सतगुरु को खोजना पड़ता है? सतगुरु तो सूर्य के समान प्रकाशमान होता है जो सब को दिखता है। गुण-अवगुण तो साधारण आदमी के भी जग जाहिर हो जाते हैं फिर सतगुरु तो सतगुरु ही होता है। उसकी हर चीज पारदर्शी होती है और वह अपनी ही बात बताने के लिए आता है। यदि सतगुरु स्वार्थी, कामी, क्रोधी, लोभी पारिवारिक मोह में फँसा बैठा है या अहंकारी है तो उसको छोड़ दो। यदि सतगुरु विचारों को गिराता है तो उसकी तरफ झाँको भी मत। जो शिष्यों की कागवृत्ति छुटवाकर उनको हंसवृत्ति का बनाता है, वही सतगुरु है। सतगुरु तो शिष्य के लिए कवच का काम करता है, जो उसके ऊपर पड़ने वाली हर चोट से उसकी रक्षा करता है। सतगुरु तो उस माली की तरह होता है जो पेड़ को खाद-पानी देकर बढ़ाता है और उसकी कटाई-छंटाई करके उसको सुन्दर बनाता है। सतगुरु शिष्य की घड़त करके उसके अवगुण निकाल कर उसमें गुण भरता है। यदि शिष्य उसकी अपनी भलाई के लिए कहे गए अपने सतगुरु के कठोर वचन सुनकर उसको छोडता है और उससे बैर बाँधता है, तो वह सतगुरु से कोई भी लाभ नहीं उठा सकता है। स्वामी जी महाराज ने कहा है कि संसार में ऐसे लोग ही अधिक है-

जो कोई वचन कहें वे कड़वा और करें अपमान भलीत।
तो मुख फेरें घर को भाजें, बैर करें, कुछ करें अनीत।।

यदि कोई शिष्य अपने संसारी घर को घर समझता है, तो यह उसका भ्रम है। उसका संसारी घर तो चोरों, ठगों और डाकुओं का एक जमावड़ा है। वे उसके किसी सामान को भी उसके पास नहीं रहने देते। कोई मीठा बोलकर उससे कुछ लेता है, तो दूसरा आगा पीछा तक करके उसके सामान को चुराता है और कोई उसको मारपीट करके भी उसका सब कुछ ले लेता है। उसके उस घर में तो रोज ही उसका अपमान होता है और रोज ही उसकी मूंछें उखाड़ी जाती हैं। यह आश्चर्यजनक बात है कि लोग फिर भी अपने उसी घर की तरफ दौड़ते हैं। यह तो वही बात हुई-किसी बूढ़े को उसके लड़कों ने पीट दिया। वह घर के दरवाजे पर बैठ कर रोने लगा। उसके पास से गुजरने वाले किसी महात्मा ने उससे पूछा-बाबा ! क्या बात है, तू क्यों रो रहा है? बूढ़े की आप बीती सुन कर महात्मा को उस पर दया आ गई। उसने उसको कहा-बाबा ! और तो मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ, तू एक काम कर। तू मेरे साथ चल। मैं तेरी सेवा करूँगा। तू भजन करते रहना। उस बूढ़े ने तुरन्त लठ उठा लिया और कहा-मोडा, तू तो मेरा घर ही छुड़वाना चाहता है, तू ठहर। यह कह कर वह उस महात्मा को पीटने के लिए दौड़ा। महात्मा ने झोली उठाई और भागा।

सतगुरु तो परमात्मा रूपी निज घर में यानि राधास्वामी धाम में अपने शिष्य की रूह को ले जाना चाहता है। परन्तु शिष्य अपने संसारी घर को जो एक घरेरे (आरे) के समान है, जो उसको रोज

चीरता है, उसको कभी नहीं छोड़ना चाहता है। वह नहीं समझता है कि उसका निज घर तो वह परमात्मा अथवा राधास्वामी धाम ही है, जहाँ कभी कोई दुख और अपमान नहीं होता है। वहाँ तो सदा सुख और शांन्ति का ही साम्राज्य रहता है। जिन शिष्यों की बुरी अवस्था होती है वह इसीलिए होती है क्योंकि उनके विचारों में वह दृढ़ता नहीं है जो बड़े महाराज जी में थी। बड़े महाराज जी सत्संगों में बहुत जाते थे। परन्तु उनके पिता जी उनकी इस बात से बहुत नाराज होते थे। एक दिन जब वे सत्संग से आए तो उनके पिता जी ने कहा-तू सत्संग में भागा फिरता है। आज तूने फलाँ काम नहीं किया है। आज मैं तुझे तीन जहान से खोकर ही छोड़ूँगा। यह कह कर उन्होंने उनको तीन लठ मारे। परन्तु बड़े महाराज जी ने कहा-पिता जी, मैं तो सत्संगों में जाता ही इसीलिए हूँ कि कोई इन तीन जहानों से मेरा पीछा छुटवाने वाला मिल जाए। यदि आप ही इस संसार से मेरा पीछा छुटवा दोगे तो मैं कभी भी कहीं नहीं जाऊँगा। इस बात ने उनके पिता जी पर गहरा प्रभाव डाला और उस दिन के बाद उनके पिता जी ने भी उनको कभी सत्संगों में जाने से नहीं रोका। जब तक शिष्य में ऐसी दृढता नहीं होती है, तभी तक वह गुरु के वचनों से नाराज होता है और वह उनको मानता भी नहीं है।

गुरु वचन माने नहीं, और गुरुही लगावे दोष।
ऐसे पापी जीव को, मरे न पावे मोक्ष।।

"मेरे भाई मेहताब बी.एस.एफ. में 29 साल सर्विस करके 1 जनवरी, 2003 को सेवानिवत्त होकर घर आ गए। घर आने के बाद उनकी मानसिक अवस्था ठीक नहीं रही और वे एक दिन 22 जनवरी, 2004 को घर से अचानक निकल गए। हम लगभग 15 दिन उनकी तलाश करते रहे। एफ. आई. आर. भी दर्ज करवाई। अखबार में भी उनका हुलिया देकर तलाश करवाने की कोशिश की और इश्तिहार भी छपवाए। परिवार वाले बूझागरों, ज्योतिषियों आदि के पास मारे-मारे फिरते रहे और वे दूर-दूर तक बूझागरों के पास भी गए, परन्तु कोई सुराग नहीं लगा। दिनांक 7 फरवरी 2004 को मैं स्वयं इस सम्बन्ध में हुजूर महाराज जी के पास गया और उनसे सारी घटना बताई तो महाराज जी ने फर्माया कि आपके भाई घर आ जाएँगे।

इसके साथ ही हुजूर महाराज जी ने एक लम्बी रस्सी मंगवाई और अपने दोनों हाथों में रस्सी के दोनों सिरे पकड़कर संगत को दिखा दिए और यह स्पष्ट कर दिया कि उनके पास उस समय केवल एक बिना कटी रस्सी थी। अब हुजूर महाराज जी ने रस्सी के कई चक्कर कटवा कर वत्ताकार में रस्सी के चक्करों को दोनों हाथों में संगत के सामने पकड़े रखा। फिर उन्होंने भण्डारे से चाकू मंगवाकर एक सत्संगी से रस्सी के चक्करों को बीच में से चाकू से कटवा दिया और अब उन्होंने सब के सामने उसी रस्सी को लटका कर दिखाया तो वह कहीं से भी कटी नहीं पाई गई। वह तो वही वैसी ही पूरी एक बिना कटी

रस्सी थी, जो उन्होंने संगत को कटवाने से पहले दिखाई थी। इस घटना पर सभी स्तब्ध थे। इसके बाद हुजूर ने मेरी तरफ देखते हुए फर्माया कि यदि हम कोई चमत्कार ही नहीं दिखाएंगे तो हमारे पास कोई नहीं आएगा।

इस घटना से तत्काल ही मुझे यह विश्वास हुआ कि हुजूर ने यह चमत्कार मुझे अपने भाई के बारे आश्वस्त करने के लिए ही किया था और मुझे तुरन्त ही पूरा निश्चय हो भी गया कि मेरा भाई मेहताब सिंह जो परिवार से कट चुका था उसको निश्चित ही हुजूर महाराज जी ने परिवार से जोड़ दिया है और वह देर सवेर आ जाएगा। इसके बाद 2 मार्च को हुजूर महाराज जी के जन्मदिन पर मैं पुनः दिनोद गया और हुजूर को बताया कि वह अभी तक तो नहीं पहुँचा है। तब भी महाराज ने पुनः यही फर्माया कि वह आएगा।

अन्त में दिनांक 8 मार्च को दिन में एक बजे ककरोई गाँव, जिला सोनीपत से किसी सज्जन की चिट्ठी हमें मिली कि मेरा भाई पिछले 10 दिन से उस गांव में है। उसी के आधार पर हम ककरोई पहुँचे और उसी दिन की रात को 10 – 11 बजे उसको घर ले कर आए। हुजूर महाराज जी के दया से आज मेरा भाई घर में ठीक प्रकार से रह रहा है। हम हुजूर की इस दया के बहुत भारी आभारी हैं।"

— फूलसिंह पुत्र श्री सरजीत सिंह
गांव/पो. मानकावास, तह. च. दादरी,
जिला भिवानी (हरियाणा)

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।

कांटेदार बेरी

महाराजा रणजीत सिंह जी की हाथी पर सवारी जा रही थी। रास्ते में एक बच्चे ने पत्थर जो मारा वह महाराज की टांग पर जा लगा। सिपाहियों ने बच्चे को पकड़ लिया और हवालात में बन्द कर दिया।

सुबह बच्चे को दरबार में पेश किया गया। बच्चा रो रहा था। उसके माँ-बाप बहुत परेशान थे। महाराज रणजीत सिंह का गुस्सा बहुत मशहूर था।

महाराजा ने सवाल किया "बेटा तुमने मुझे पत्थर क्यों मारा ?" बच्चे ने रोते-रोते जवाब दिया "महाराज मैंने पत्थर आपको नहीं मारा। बेरी को मारा था। वह बेरी पर लगने के बजाय आपको जा लगा। अगर वह बेरी को लगता तो मुझे मीठे बेर मिलते। आपको लग गया अब मुझे फाँसी मिलेगी।"

महाराज ने हुकम दिया "लड़के को एक मोतियों का थाल भर कर दे दो।" दरबारी हैरान थे कि यह क्या हुआ?

महाराज ने समझाया "कांटेदार निकम्मी बेरी पत्थर खाकर मीठे बेर देती है। क्या हम उससे भी निकम्मे हैं जो पत्थर खाकर सजा देते।"

बड़े बडाई न तजें—बड़े न बोलें बोल।
रहिमन हीरा न कहे, लाख टका मेरा मोल।

आवश्यक सूचना

सभी सत्संगियों की जानकारी के लिए यह प्रसारित किया जाता है कि बड़े महाराज जी (पूज्य परम सन्त हुजूर ताराचन्द जी महाराज) ने अपने जीवन काल में ही 'राधास्वामी सत्संग ट्रस्ट (दिनोद), भिवानी' के नाम से एक ट्रस्ट की स्थापना की थी।

उन्हीं के उत्तराधिकारी हुजूर कंवर सिंह जी सत्संगों द्वारा उनका उद्देश्य आगे बढ़ा रहे हैं। परम सन्त हुजूर ताराचन्द जी महाराज ने इनके अलावा किसी को अधिकृत नहीं किया था।

लेकिन कुछ अवांछित व्यक्ति अपने स्वार्थवश अपना अलग सत्संग चलाकर हुजूर परम सन्त ताराचन्द जी महाराज के नाम के साथ जोड़ रहे हैं जो कि एक दण्डनीय अपराध है।

अत: सभी सत्संगियों से अनुरोध है कि वे उन अवांछित व्यक्तियों के नाम तथा वे प्रमाण जिनके आधार पर वे स्वयं को हुजूर परम सन्त ताराचन्द जी महाराज से जोड़े हुए हैं, ट्रस्ट कार्यालय में भेजें ताकि दस्तावेजों के आधार पर उनसे कानूनी कार्यवाही की जा सके।

सचिव
राधास्वामी सत्संग दिनोद
भिवानी (हरियाणा)

प्राय: सत्संगी भाई और बहनें रविवार के दिन सत्संग में आकर दवाइयों और बीमारियों के लिए अनुरोध करते हैं। ऐसा करना संगत के लिए अच्छा नहीं लगता। अत: रविवार के दिन तो केवल सत्संग और आशीर्वाद के लिए ही आएं।

सचिव
राधास्वामी सत्संग दिनोद
भिवानी (हरियाणा)